8 रामवृक्ष बेनीपुरी

रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म सन् 1902 ई० में बिहार स्थित मुजफ्फरपुर जिले के बेनीपुर गाँव में हुआ था। इनके पिता श्री फूलवन्त सिंह एक साधारण किसान थे। बचपन में ही इनके माता-पिता का देहावसान हो गया और इनका लालन-पालन इनकी मौसी की देखरेख में हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा बेनीपुर में ही हुई। बाद में इनकी शिक्षा इनके ननिहाल में भी हुई। मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण करने के पूर्व ही सन् 1920 में इन्होंने अध्ययन छोड़ दिया और महात्मा गाँधी के नेतृत्व में प्रारम्भ हुए असहयोग आन्दोलन में कूद पड़े। बाद में हिन्दी साहित्य सम्मेलन से 'विशारद' की परीक्षा उत्तीर्ण की। ये राष्ट्रसेवा के साथ-साथ साहित्य की भी साधना करते रहे। साहित्य की ओर इनकी रुचि 'रामचरितमानस' के अध्ययन से जागृत हुई। पन्द्रह वर्ष की आयु से ही ये पत्र-पत्रिकाओं में लिखने लगे थे। देश-सेवा के परिणामस्वरूप इनको अनेक वर्षों तक जेल की यातनाएँ भी सहनी पड़ीं। सन् 1968 में इनका निधन हो गया।

लेखक-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—सन् 1902 ई०।
- **जन्म-स्थान**—बेनीपुर, मुजफ्फरपुर, (बिहार)।
- **पिता**—फूलवन्त सिंह।
- **शिक्षा**—हिन्दी-साहित्य सम्मेलन, प्रयागराज से विशारद।
- **संपादन**—नई धारा, तरुण भारत आदि।
- **भाषा**—व्यावहारिक, लाक्षणिक, व्यंग्यात्मक हिन्दी।
- **शैली**—भावात्मक, शब्दचित्रात्मक, प्रतीकात्मक, वर्णनात्मक।
- **प्रमुख रचनाएँ**—गेहूँ और गुलाब, माटी की मूरतें, जंजीरें और दीवारें, पैरों में पंख बाँधकर, उड़ते चलें, मील के पत्थर।
- **मृत्यु**—सन् 1968 ई०।
- **साहित्य में स्थान**—हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में एक प्रतिभासम्पन्न साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठित।

बेनीपुरी जी के निबंध संस्मरणात्मक और भावात्मक हैं। भावुक हृदय के तीव्र उच्छ्वास की छाया इनके प्रायः सभी निबंधों में विद्यमान है। इन्होंने जो कुछ लिखा है वह स्वतंत्र भाव से लिखा है। ये एक राजनीतिक एवं समाजसेवी व्यक्ति थे। विधानसभा, सम्मेलन, किसान सभा, राष्ट्रीय आन्दोलन, विदेश-यात्रा, भाषा-आन्दोलन आदि के बीच में रमे रहते हुए भी इनका साहित्यकार व्यक्तित्व हिन्दी साहित्य को अनेक सुन्दर ग्रंथ दे गया है। इनकी अधिकांश रचनाएँ जेल में लिखी गयी हैं किन्तु इनका राजनीतिक व्यक्तित्व इनके साहित्यकार व्यक्तित्व को दबा नहीं सका। इनकी शैली की विशिष्टताएँ कई हैं जो इनके हर लेखन में मिलती हैं। बेनीपुरी का गद्य हिन्दी की प्रकृति के सर्वथा अनुकूल है, बातचीत के करीब है और कथ्य को सहज भाव से पाठकों की चेतना में उतार देता है।

बेनीपुरी जी ने उपन्यास, नाटक, कहानी, संस्मरण, निबंध, रेखाचित्र आदि सभी गद्य-विधाओं पर अपनी कलम उठायी है। इनके कुछ प्रमुख ग्रंथ निम्नलिखित हैं :

निबन्ध और रेखाचित्र—'मशाल', 'गेहूँ और गुलाब', 'वन्दे वाणी विनायकौ', 'माटी की मूरतें', 'लालतारा' आदि।

संस्मरण—'मील के पत्थर', 'जंजीरें और दीवारें'।

नाटक—'अम्बपाली', 'सीता की माँ', 'रामराज्य'।

उपन्यास—'पतितों के देश में'।

कहानी संग्रह—'चिता के फूल'।

जीवनी—'जयप्रकाश नारायण', 'महाराणा प्रतापसिंह', 'कार्ल मार्क्स'।

यात्रावृत्तान्त—'उड़ते चलें', 'पैरों में पंख बाँधकर'।

आलोचना—'बिहारी सतसई की सुबोध टीका', 'विद्यापति पदावली'।

पत्र-पत्रिकाएँ—'तरुण भारती', 'युवक', 'हिमालय', 'नई धारा', 'कैदी', 'जनता', 'योगी', 'बालक', 'किसान-मित्र', 'चुन्नू-मुन्नू' आदि पत्र-पत्रिकाओं का कुशल संपादन। इनका संपूर्ण साहित्य 'बेनीपुरी ग्रंथावली' नाम से दस खण्डों में प्रकाशित है।

बेनीपुरी जी के सम्पूर्ण साहित्य को बेनीपुरी ग्रंथावली नाम से दस खण्डों में प्रकाशित कराने की योजना थी, जिसके कुछ खण्ड प्रकाशित हो सके। निबंधों और रेखाचित्रों के लिए इनकी ख्याति सर्वाधिक है। माटी की मूरत इनके श्रेष्ठ रेखाचित्रों का संग्रह है जिसमें बिहार के जन-जीवन को पहचानने के लिए अच्छी सामग्री है। कुल 12 रेखाचित्र हैं और सभी एक-से-एक बढ़कर हैं।

बेनीपुरी जी के गद्य-साहित्य में गहन अनुभूतियों एवं उच्च कल्पनाओं की स्पष्ट झाँकी मिलती है। भाषा में ओज है। इनकी खड़ीबोली में कुछ आंचलिक शब्द भी आ जाते हैं, किन्तु इन प्रांतीय शब्दों से भाषा के प्रवाह में कोई विघ्न नहीं उपस्थित होता। भाषा के तो ये 'जादूगर' माने जाते हैं। इनकी भाषा में संस्कृत, अंग्रेजी और उर्दू के प्रचलित शब्दों का प्रयोग हुआ है। भाषा को सजीव, सरल और प्रवाहमयी बनाने के लिए मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग भी किया है। इनकी रचनाओं में विषय के अनुरूप विविध शैलियों के दर्शन होते हैं। शैली में विविधता है। कहीं चित्रोपम शैली, कहीं डायरी शैली, कहीं नाटकीय शैली। किन्तु सर्वत्र भाषा में प्रवाह एवं ओज विद्यमान है। वाक्य छोटे होते हैं किन्तु भाव पाठकों को विभोर कर देते हैं।

बेनीपुरी जी बहुमुखी प्रतिभावाले लेखक हैं। इन्होंने गद्य की विभिन्न विधाओं को अपनाकर विपुल मात्रा में साहित्य की सृष्टि की। पत्रकारिता से ही इनकी साहित्य-साधना का प्रारम्भ हुआ। साहित्य-साधना और देशभक्ति दोनों ही इनके प्रिय विषय रहे हैं। इनकी रचनाओं में कहानी, उपन्यास, नाटक, रेखाचित्र, संस्मरण, जीवनी, यात्रावृत्तान्त, ललित लेख आदि के अच्छे उदाहरण मिल जाते हैं।

प्रस्तुत निबंध **'गेहूँ बनाम गुलाब'** इनके गेहूँ और गुलाब नामक ग्रंथ का पहला निबंध है। इसमें लेखक ने गेहूँ को आर्थिक और राजनीतिक प्रगति का द्योतक माना है तथा गुलाब को सांस्कृतिक प्रगति का। इसमें इन्होंने प्रतिपादित किया है कि राजनीतिक एवं आर्थिक प्रगति सदा एकांगी रहेगी और इसे पूर्ण बनाने के लिए सांस्कृतिक प्रगति की आवश्यकता होगी। मानव-संस्कृति के विकास के लिए साहित्यकारों एवं कलाकारों की भूमिका गुलाब की भूमिका है और इसका अपना स्थान है। गेहूँ और गुलाब में प्राचीन काल में समन्वय था, किन्तु आज आवश्यकता इस बात की है कि गेहूँ पर विजय प्राप्त की जाय।

●●●

गेहूँ बनाम गुलाब

गेहूँ हम खाते हैं, गुलाब सूँघते हैं। एक से शरीर की पुष्टि होती है, दूसरे से हमारा मन तृप्त होता है।

गेहूँ बड़ा या गुलाब? हम क्या चाहते हैं—पुष्ट शरीर या तृप्त मानस? या पुष्ट शरीर पर तृप्त मानस।

जब मानव पृथ्वी पर आया, भूख लेकर। क्षुधा, क्षुधा; पिपासा, पिपासा। क्या खाये क्या पिये? माँ के स्तनों को निचोड़ा, वृक्षों को झकझोरा, कीट-पतंग, पशु-पक्षी—कुछ न छूट पाये उससे!

गेहूँ—उसकी भूख का काफला आज गेहूँ पर टूट पड़ा है। गेहूँ उपजाओ, गेहूँ उपजाओ!

मैदान जोते जा रहे हैं, बाग उजाड़े जा रहे हैं—गेहूँ के लिए।

बेचारा गुलाब—भरी जवानी में सिसकियाँ ले रहा है। शरीर की आवश्यकता ने मानसिक वृत्तियों को कहीं कोने में डाल रखा है, दबा रखा है।

किन्तु; चाहे कच्चा चरे, या पकाकर खाये—गेहूँ तक पशु और मानव में क्या अन्तर? मानव को मानव बनाया गुलाब ने! मानव, मानव तब बना, जब उसने शरीर की आवश्यकताओं पर मानसिक वृत्तियों को तरजीह दी।

यही नहीं, जब उसके पेट में भूख खाँव-खाँव कर रही थी, तब भी उसकी आँखें गुलाब पर टँगी थीं, टँकी थीं।

उसका प्रथम संगीत निकला, जब उसकी कामिनियाँ गेहूँ को ऊखल और चक्की में कूट-पीस रही थीं। पशुओं को मारकर, खाकर ही वह तृप्त नहीं हुआ, उनकी खाल का बनाया ढोल और उनकी सींग की बनायी तुरही। मछली मारने के लिए जब वह अपनी नाव में पतवार का पंख लगाकर जल पर उड़ा जा रहा था, तब उसके छप-छप में उसने ताल पाये, तराने छेड़े! बाँस से उसने लाठी ही नहीं बनायी, वंशी भी बजायी।

रात का काला घुप्प पर्दा दूर हुआ, तब वह उच्छ्वसित हुआ सिर्फ इसलिए नहीं कि अब पेट-पूजा की समिधा जुटाने में उसे सहूलियत मिलेगी; बल्कि वह आनन्द-विभोर हुआ ऊषा की लालिमा से, उगते सूरज की शनैः-शनैः प्रस्फुटित होनेवाली सुनहरी किरणों से, पृथिवी पर चमचम करते लक्ष-लक्ष ओस-कणों से! आसमान में जब बादल उमड़े, तब उसमें अपनी कृषि का आरोप करके ही वह प्रसन्न नहीं हुआ; उसके सौंदर्य-बोध ने उसके मनमोर को नाच उठने के लिए लाचार किया—इन्द्रधनुष ने उसके हृदय को भी इन्द्रधनुषी रंगों में रंग दिया।

मानव शरीर में पेट का स्थान नीचे है, हृदय का ऊपर और मस्तिष्क का सबसे ऊपर! पशुओं की तरह उसका पेट और मानस समानान्तर रेखा में नहीं है। जिस दिन वह सीधे तनकर खड़ा हुआ, मानस ने उसके पेट पर विजय की घोषणा की।

गेहूँ की आवश्यकता उसे है, किन्तु उसकी चेष्टा रही है गेहूँ पर विजय प्राप्त करने की। प्राचीन काल के उपवास, व्रत, तपस्या आदि उसी चेष्टा के भिन्न-भिन्न रूप रहे हैं।

जब तक मानव के जीवन में गेहूँ और गुलाब का संतुलन रहा, वह सुखी रहा, सानन्द रहा।

वह कमाता हुआ गाता था और गाता हुआ कमाता था। उसके श्रम के साथ संगीत बँधा हुआ था और संगीत के साथ श्रम।

उसका साँवला दिन में गायें चराता था, रास रचाता था।

पृथिवी पर चलता हुआ वह आकाश को नहीं भूला था और जब आकाश पर उसकी नजरें गड़ी थीं, उसे याद था कि उसके पैर मिट्टी पर हैं।

किन्तु धीरे-धीरे यह संतुलन टूटा।

अब गेहूँ प्रतीक बन गया हड्डी तोड़नेवाले, उबालनेवाले, नारकीय यंत्रणाएँ देनेवाले श्रम का—उस श्रम का, जो पेट की क्षुधा भी अच्छी तरह शान्त न कर सके।

और, गुलाब बन गया प्रतीक विलासिता का—भ्रष्टाचार का, गन्दगी और गलीज का! वह विलासिता—जो शरीर को नष्ट करती है और मानस को भी!

अब उसके साँवले ने हाथ में शंख और चक्र लिए। नतीजा—महाभारत और यदुवंशियों का सर्वनाश।

वह परम्परा चली आ रही है! आज चारों ओर महाभारत है, गृह-युद्ध है—सर्वनाश है, महानाश है!

गेहूँ सिर धुन रहा है खेतों में, गुलाब रो रहा है बगीचों में—दोनों अपने-अपने पालनकर्त्ताओं के भाग्य पर, दुर्भाग्य पर—!

चलो, पीछे मुड़ो! गेहूँ और गुलाब में हम फिर एक बार संतुलन स्थापित करें।

किन्तु मानव क्या पीछे मुड़ा है; मुड़ सकता है?

यह महायात्रा! आगे बढ़ता रहा है, आगे बढ़ता रहेगा!

और क्या नवीन संतुलन चिर-स्थायी हो सकेगा? क्या इतिहास फिर दुहरकर नहीं रहेगा?

नहीं, मानव को पीछे मोड़ने की चेष्टा न करो।

अब गुलाब और गेहूँ में फिर संतुलन लाने की चेष्टा में सिर खपाने की आवश्यकता नहीं।

अब गुलाब गेहूँ पर विजय प्राप्त करे।

गेहूँ पर गुलाब की विजय-चिर-विजय! अब नये मानव की यह नयी आकांक्षा हो!

क्या यह संभव है?

बिलकुल सोलह आने संभव है।

विज्ञान ने बता दिया है—यह गेहूँ क्या है? और उसने यह भी जता दिया है कि मानव में यह चिर-बुभुक्षा क्यों है?

गेहूँ का गेहूँत्व क्या है, हम जान गये हैं। यह गेहूँत्व उसमें आता कहाँ से है, हम से यह भी छिपा नहीं है।

पृथिवी और आकाश के कुछ तत्त्व एक विशेष प्रक्रिया से पौधों की बालियों में संगृहीत होकर गेहूँ बन जाते हैं। उन्हीं तत्त्वों की कमी हमारे शरीर में भूख नाम पाती है!

क्यों पृथिवी की जुताई, कुड़ाई, गुड़ाई! क्यों आकाश की दुहाई! हम पृथिवी और आकाश से उन तत्त्वों को सीधे ग्रहण क्यों न करें?

यह तो अनहोनी बात—उटोपिया, फुटोपिया!

हाँ, यह अनहोनी बात, उटोपिया तब तक बनी रहेगी जब तक विज्ञान संहार-कांड के लिए ही आकाश-पाताल एक करता रहेगा। ज्योंही उसने जीवन की समस्याओं पर ध्यान दिया, एक हस्तामलकवत् सिद्ध होकर रहेगी!

और, विज्ञान को इस ओर आना है, नहीं तो मानव का क्या, सारे ब्रह्माण्ड का संहार निश्चित है!

विज्ञान धीरे-धीरे इस ओर कदम बढ़ा भी रहा है!

कम से कम इतना तो वह तुरंत कर ही देगा कि गेहूँ इतना पैदा हो कि जीवन की अन्य परमावश्यक वस्तुएँ—हवा, पानी की तरह—इफरात हो जायँ। बीज, खाद, सिंचाई-जुताई के ऐसे तरीके निकलते ही जा रहे हैं, जो गेहूँ की समस्या को हल कर दें।

प्रचुरता—शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति करनेवाले साधनों की प्रचुरता—की ओर आज का मानव प्रभावित हो रहा है।

* * * *

प्रचुरता?—एक प्रश्न चिह्न?

क्या प्रचुरता मानव को सुख और शांति दे सकती है?

'हमारा सोने का हिन्दुस्तान'—यह गीत गाइए; किन्तु यह न भूलिए कि यहाँ एक सोने की नगरी थी, जिसमें राक्षसता वास करती थी!

राक्षसता—जो रक्त पीती थी, अभक्ष्य खाती थी, जिसके अकाय शरीर थे, दस सिर थे, जो छह महीने सोती थी; जिसे दूसरे की बहू-बेटियों का उड़ा ले जाने में तनिक भी झिझक नहीं थी।

गेहूँ बड़ा प्रबल है—वह बहुत दिनों तक हमें शरीर का गुलाम बनाकर रखना चाहेगा! पेट की क्षुधा शान्त कीजिए, तो वह वासनाओं की क्षुधा जागृत कर आपको बहुत दिनों तक तबाह करना चाहेगा।

तो प्रचुरता में भी राक्षसता न आवे, इसके लिए क्या उपाय?

अपनी वृत्तियों को वश में करने के लिए आज मनोविज्ञान दो उपाय बताता है—इंद्रियों के संयमन और वृत्तियों के उन्नयन का।

संयमन का उपदेश हमारे ऋषि-मुनि देते आये हैं। किन्तु इसके बुरे नतीजे भी हमारे सामने आये हैं—बड़े-बड़े तपस्वियों की लम्बी-लम्बी तपस्याएँ एक रम्भा, एक मेनका, एक उर्वशी की मुसकान पर स्खलित हो गयीं।

आज भी देखिए, गाँधीजी के तीस वर्ष के उपदेशों और आदेशों पर चलनेवाले हम तपस्वी किस तरह दिन-दिन नीचे गिरते जा रहे हैं।

इसलिए उपाय एकमात्र है—वृत्तियों के उन्नयन का।

कामनाओं को स्थूल वासनाओं के क्षेत्र से ऊपर उठाकर सूक्ष्म भावनाओं की ओर प्रवृत्त कीजिए।

शरीर पर मानस की पूर्ण प्रभुता स्थापित हो—गेहूँ पर गुलाब की!

गेहूँ के बाद गुलाब—बीच में कोई दूसरा टिकाव नहीं, ठहराव नहीं।

* * * *

गेहूँ की दुनिया खत्म होने जा रही है—वह स्थूल दुनिया, जो आर्थिक और राजनीतिक रूप में हम सब पर छायी है।

जो आर्थिक रूप में रक्त पीती रही है; राजनीतिक रूप में रक्त की धारा बहाती रही है!

अब वह दुनिया आनेवाली है जिसे हम गुलाब की दुनिया कहेंगे!

गुलाब की दुनिया—मानस का संसार—सांस्कृतिक जगत्।

अहा, कैसा वह शुभ दिन होगा जब हम स्थूल शारीरिक आवश्यकताओं की जंजीर तोड़कर सूक्ष्म मानस-जगत् का नया लोक बसायेंगे।

जब गेहूँ से हमारा पिंड छूट जायगा और हम गुलाब की दुनिया में स्वच्छन्द विहार करेंगे।

गुलाब की दुनिया—रंगों की दुनिया, सुगंधों की दुनिया!

भौंरे नाच रहे, गूँज रहे, फलसुँघनी फुदक रही, चहक रही!

नृत्य, गीत—आनन्द, उछाह!

कहीं गन्दगी नहीं, कहीं कुरूपता नहीं! आँगन में गुलाब; खेतों में गुलाब! गालों पर गुलाब खिल रहे; आँखों से गुलाब झाँक रहा!

जब सारा मानव-जीवन रंगमय, सुगन्धमय, नृत्यमय, गीतमय बन जायगा? वह दिन कब आयगा?

वह आ रहा है—क्या आप देख नहीं रहे? कैसी आँखें हैं आपकी! शायद उन पर गेहूँ का मोटा पर्दा पड़ा हुआ है। पर्दे को हटाइए और देखिए वहाँ अलौकिक, स्वर्गिक दृश्य इसी लोक में, अपनी इस मिट्‌टी की पृथिवी पर हो!

'शौके दीदार अगर है, तो नजर पैदा कर।'

—रामवृक्ष बेनीपुरी

अभ्यास प्रश्न

➡ गद्यांश पर आधारित प्रश्न

1. निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर उनके नीचे दिये गये प्रश्नों का उत्तर लिखिए—

(क) मानव शरीर में पेट का स्थान नीचे है, हृदय का ऊपर और मस्तिष्क का सबसे ऊपर। पशुओं की तरह उसका पेट और मानस समानान्तर रेखा में नहीं है। जिस दिन वह सीधे तनकर खड़ा हुआ, मानस ने उसके पेट पर विजय की घोषणा की।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

अथवा गद्यांश के लेखक एवं पाठ का नाम लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) मानव शरीर और पशु शरीर में क्या अंतर है?

(iv) मानव शरीर के प्रमुख तीन अंग कौन से हैं?

(v) गद्यांश का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ख) गेहूँ की आवश्यकता उसे है, किन्तु उसकी चेष्टा रही है गेहूँ पर विजय प्राप्त करने की। प्राचीन काल के उपवास, व्रत, तपस्या आदि उसी चेष्टा के भिन्न-भिन्न रूप रहे हैं।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

अथवा गद्यांश के लेखक एवं पाठ का नाम लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) लेखक के अनुसार मानव के लिए क्या आवश्यक है?

(iv) प्राचीनकाल से मानव के व्रत, उपवास एवं तपस्या करने का क्या प्रयोजन था?

(v) मनुष्य को गेहूँ की आवश्यकता क्यों पड़ती है?

(ग) गेहूँ बड़ा प्रबल है– वह बहुत दिनों तक हमें शरीर का गुलाम बनाकर रखना चाहेगा! पेट की क्षुधा शान्त कीजिए, तो वह वासनाओं की क्षुधा जागृत कर आपको बहुत दिनों तक तबाह करना चाहेगा।

तो प्रचुरता में भी राक्षसता न आवे, इसके लिए क्या उपाय?

अपनी वृत्तियों को वश में करने के लिए आज मनोविज्ञान दो उपाय बताता है– इंद्रियों के संयमन और वृत्तियों के उन्नयन का।

संयमन का उपदेश हमारे ऋषि-मुनि देते आये हैं। किन्तु इसके बुरे नतीजे भी हमारे सामने आये हैं–बड़े-बड़े तपस्वियों की लम्बी-लम्बी तपस्याएँ एक रम्भा, एक मेनका, एक उर्वशी की मुसकान पर स्खलित हो गयीं।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

अथवा गद्यांश के लेखक एवं पाठ का नाम लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) गेहूँ को प्रबल क्यों कहा गया है?

(iv) अपनी वृत्तियों को वश में करने के लिए मनोविज्ञान ने कौन से उपाय बताये हैं?

(v) गद्यांश के अनुसार संयमन के कौन से दोष परिलक्षित होते हैं?

(घ) गेहूँ की दुनिया खत्म होने जा रही है– वह स्थूल दुनिया, जो आर्थिक और राजनीतिक रूप में हम सब पर छायी है। जो आर्थिक रूप में रक्त पीती रही है; राजनीतिक रूप में रक्त की धारा बहाती रही है!

अब वह दुनिया आनेवाली है जिसे हम गुलाब की दुनिया कहेंगे!

गुलाब की दुनिया–मानस का संसार–सांस्कृतिक जगत्।

अहा, कैसा वह शुभ दिन होगा जब हम स्थूल शारीरिक आवश्यकताओं की जंजीर तोड़कर सूक्ष्म मानस-जगत् का नया लोक बसायेंगे।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा गद्यांश के लेखक एवं पाठ का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) गद्यांश के अनुसार अब कौन-सा युग आने वाला है? इस युग का संसार कैसा होगा?
(iv) लेखक ने गेहूँ और गुलाब को किसका प्रतीक माना है?
(v) किसकी दुनिया खत्म होने जा रही है?

➡ दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. रामवृक्ष बेनीपुरी की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।
2. इस पाठ का सारांश अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए।
3. रामवृक्ष बेनीपुरी की जीवनी एवं कृतियों का उल्लेख कीजिए।
4. रामवृक्ष बेनीपुरी का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।
5. रामवृक्ष बेनीपुरी का साहित्यिक परिचय दीजिए।
6. निम्नांकित सूक्तियों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए—
   (क) मानव ने बाँस से लाठी ही नहीं बनायी वंशी भी बजायी।
   (ख) गुलाब की दुनिया–रंगों की दुनिया, सुगंधों की दुनिया।
   (ग) उसके श्रम के साथ संगीत बँधा हुआ था और संगीत के साथ श्रम।
   (घ) शौके दीदार अगर है तो नजर पैदा कर!
   (ङ) गेहूँ की दुनिया खत्म होने जा रही है—वह स्थूल दुनिया, जो आर्थिक और राजनीतिक रूप से हम सब पर छायी है।
   (च) गेहूँ सिर धुन रहा है खेतों में, गुलाब रो रहा है बगीचों में।
   (छ) मानव शरीर में पेट का स्थान नीचे है, हृदय का ऊपर और मस्तिष्क का सबसे ऊपर।

➡ लघु उत्तरीय प्रश्न

1. गेहूँ और गुलाब की आवश्यकता समाज को किस प्रकार से है?
2. 'गेहूँ बनाम गुलाब' नामक निबंध में गेहूँ व गुलाब किसके प्रतीक हैं?
3. 'मानव पशु से किस प्रकार श्रेष्ठ है'– समीक्षा कीजिए।
4. लेखक क्यों कहता है कि 'मानव को मानव बनाया गुलाब ने।'
5. गेहूँ और गुलाब में संतुलन टूटने पर क्या होता है?
6. गेहूँ पर गुलाब की प्रभुता का क्या तात्पर्य है?
7. लेखक के अनुसार गेहूँ पर विजय किस प्रकार पायी जा सकती है?
8. गुलाब को किस प्रकार की भावना का द्योतक बताया गया है?
9. विज्ञान मानव की लक्ष्य-प्राप्ति में किस प्रकार सहायक बन सकता है?
10. 'वृत्तियों के उन्नयन' से लेखक का क्या तात्पर्य है?
11. मानव के भविष्य के कैसे चित्र की कल्पना लेखक ने की है?
12. 'गेहूँ बनाम गुलाब' पाठ का मुख्य संदेश क्या है?
13. गुलाब की दुनिया का वर्णन लेखक ने किस प्रकार किया है? स्पष्ट कीजिए।
14. 'गेहूँ और गुलाब' के मूल भाव पर विचार कीजिए।
15. बेनीपुरी ने पशु और मानव में क्या अन्तर बताया है?

●●●